झारखण्ड सरकार
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग
(सहकारिता प्रभाग)

संकल्प

विषय :– लाह की खेती को कृषि का दर्जा दिये जाने के संबंध में।

लाह एक प्राकृतिक राल है जो लाह कीट के द्वारा पौधों का रस चूसने के उपरान्त स्राव के फलस्वरूप प्राप्त होता है। लाह कीट पालन (लाह की खेती) वन एवं उपवन में रहने वालों के साथ ही अन्य छोटे किसानों के लिये आय का एक उत्तम स्रोत है।

02. 400 से अधिक पौधों पर लाह कीट पाया गया है लेकिन लगभग 30 पौधों पर लाह की व्यवसायिक खेती की जा सकती है जिनमें से पलास, कुसुम, बैर एवं सेमियालता लाह खेती हेतु मुख्य लाह पोषक वृक्ष हैं। लाह की खेती से स्वरोजगार एवं आय सृजन के साथ–साथ ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योग को बढ़ावा मिलता है। भारत वर्ष में 25 करोड़ परिवारों में से लगभग 10 लाख परिवार लाह की खेती से जुड़े हुए है। लाह की खेती में प्रमुख रूप से पूर्वी एवं मध्य भारत के झारखण्ड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा एवं प0 बंगाल का योगदान है। घरेलु खपत के साथ साथ लाह एक निर्यात उत्पाद है, जिसके कारण देश की विदेशी मुद्रा अर्जन में भी इसका योगदान है। लाह खेती जीवकोपार्जन के साथ–साथ वन संरक्षण एवं पर्यावरण को अनुकूल बनाये रखने का भी एक साधन है। लाह एक प्राकृतिक उत्पाद होने के कारण विभिन्न उद्योगों में इसका उपयोग किया जाता है यथा–खाद्य उद्योग, दवाई उद्योग, पेन्ट उद्योग, टेक्सटाईल उद्योग, कोसमेटिक, इलेक्ट्रीकल उद्योग, इत्र उद्योग, फल एवं सब्जी कोटिंग, पॉलिस उद्योग, लाह चुड़ी व हस्तशिल्प उद्योग इत्यादि।

लाह मूल्य संवर्द्धन यथा– सीडलैक, लैकडाई, शैलेक, बटन लैक, ब्लीच्डलैक, एल्यूरीटिक एसीड एवं आईसोइम्ब्रोलाईड का उत्पादन भारत वर्ष में मूलतः झारखण्ड, प0 बंगाल एवं छत्तीसगढ़ में होता है। झारखण्ड में ग्रामीण स्तर पर लाह मूल्य संवर्द्धन मुख्यतः सीडलैक, हस्तनिर्मित चपड़ा, बटन लैक, लैक सिलिंग स्टीक एवं लाह चूड़ी जैसे कुटीर उद्योगों के क्षेत्र में युवाओं विशेषकर महिलाओं में उद्यमिता के विकास के अवसर प्रदान करता है।

03. **वर्तमान में लाह खेती को गैर काष्ठ वन उत्पाद (Non Timber Forest Produce) के रूप में वर्गीकरण किया गया है।** यद्यपि लाह की खेती अन्य कृषि फसलों की तरह वैज्ञानिक एवं परम्परागत पद्धति से की जाती है, जबकि अन्य लघुवनोत्पाद का सिर्फ संग्रह किया जाता है। लाह की खेती करने में अन्य कृषि उपज की तरह Land Preparation, Seed sowing/nursery Preparation, Transplanting, manuring and use fertilizers, pruning inoculation of broodlac spraying, intercultural operations and harvesting of lac crop इत्यादि कार्य किये जाते हैं। वनोपज से होने वाली आमदनी आयकर के दायरें में होने के कारण लाह खेती के विस्तार में व्यवहारिक कठिनाई उत्पन्न

536
26.04.2023